Prof. Khushbu kumari
Guest Teacher,
Dept. of Political science
V.S.J. College, Rajnagar, Madhubani (Lnmu)

Class - B.A-I (H)
Paper - I

राज्य के कार्य (लोक कल्याणकारी राज्य)

लोक कल्याणकारी राज्य का तात्पर्य एक ऐसे राज्य से होता है जिसके अन्तर्गत शासन की शक्ति का प्रयोग किसी वर्ग विशेष के कल्याण के लिए नहीं बल्कि सम्पूर्ण जनता के कल्याण के लिए किया जाता है। अपने मूल रूप में लोककल्याणकारी राज्य की धारणा सदैव ही विद्यमान रही है, लेकिन वर्तमान समय में इसका रूप ज्यादा व्यापक हो गया है।

वर्तमान समय में लोककल्याणकारी राज्य के कार्य निम्नलिखित है —

(1) आन्तरिक सुरक्षा तथा विदेशी आक्रमणों से रक्षा — लोककल्याणकारी राज्य का सबसे प्रमुख कार्य आन्तरिक सुव्यवस्था बनाये रखना, अपने प्रदेश में शान्ति की स्थापना करना तथा अपने नागरिकों की रक्षा करना एवं विदेशी आक्रमणों से देश की रक्षा करना है।

(2) व्यक्तियों के पारस्परिक सम्बन्धों और राज्य एवं व्यक्तियों के सम्बन्धों की व्यवस्था — लोककल्याणकारी राज्य के द्वारा व्यक्तियों के पारस्परिक सम्बन्धों का नियन्त्रण किया जाता है। इसके लिए राज्य कानूनों का निर्माण करता है एवं पुलिस और न्यायालय की सहायता से उन्हें लागू करता है। इसके अतिरिक्त व्यक्ति एवं राज्य के सम्बन्धों को निर्धारित करने का कार्य भी राज्य के द्वारा ही किया जाता है।

Scanned with CamScanner

(3) कृषि, उद्योग तथा व्यापार का नियमन एवं विकास — लोककल्याणकारी राज्य के द्वारा कृषि, उद्योग तथा व्यापार का नियमन एवं विकास कार्य राज्य को आर्थिक रूप से सम्पन्न बनाने के लिए किया जाता है इसमें मुद्रा निर्माण, प्रामाणिक माप और तौल की व्यवस्था, व्यवसायों का नियमन, कृषकों को राजकोषीय सहायता, नहरों का निर्माण, कृषि-सुधार इत्यादि विषय सम्मिलित हैं।

(4) आर्थिक सुरक्षा — लोककल्याणकारी राज्य का अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य आर्थिक सुरक्षा सम्बन्धी होता है। इसमें व्यक्तियों को रोजगार तथा ~~आय~~ अधिकतम समानता की स्थापना प्रमुख है। ऐसे व्यक्ति जो ~~शारी~~ शारीरिक और मानसिक दृष्टि से कार्य करने की क्षमता रखते हैं, राज्य के द्वारा उन्हें उनकी योग्यता के अनुसार किसी-न-किसी प्रकार का कार्य अवश्य दिया जाना चाहिए। जो व्यक्ति किसी भी प्रकार कार्य करने में असमर्थ हैं, उनके लिए राज्य द्वारा जीवन निर्वाह भत्ते की व्यवस्था की जानी चाहिए।

(5) अन्य कार्य — (i) जमाखोरी तथा कालाबाजारी को रोकना।

(ii) यातायात तथा संचार व्यवस्था जैसे रेल, सड़क, बस, टेलीफोन आदि की व्यवस्था करना।

(iii) परिवार नियोजन को प्रोत्साहन प्रदान करना।

Page No ______
Date ______

(iv) दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, छुआछूत, जातिवाद जैसी सामाजिक समस्याओं को दूर करने का प्रयास करना।

(v) सामाजिक शोषण को दूर करना।

(vi) समाज में सफाई, सेहत आदि का ध्यान रखना।

(vii) कला, साहित्य, संगीत आदि को बढ़ावा देना तथा अश्लील कला, साहित्य, संगीत पर रोक लगाना।

(viii) वैज्ञानिक तथा तकनीकी अनुसंधान को बढ़ावा देना।

(ix) जनता को राज्य कार्यों में उचित मौका देना तथा भ्रष्टाचार को खत्म करना।

Khushbu Kumari
18th July 2020

Scanned with CamScanner